वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अक्तूबर – 2015

* मनुष्य की दौड़
* क्या हमारा जीवन सफल हो रहा है।
* ईमानदारी कहां खो गई
* बहार जीवन में एक दिन नहीं आती।
* मिथ्या विश्वासों का माया जाल
* श्रेष्ठ होना दूसरों को इन्सान के रूप में स्वीकार करना है
* विशेष सत्संग वा सत्य धर्म बोध उत्सव
* शोक समाचार

श्री अकबरपुर के प्रति श्रद्धा के फूल

देवगुरु की देवनगरी को मेरा प्रणाम है,
देव जीवन से सम्बन्धित यह एक पावन धाम है।
तिलक इस धरती के कण से है मैंनें भी माथे पर किया,
कृतज्ञता, श्रद्धा ने ही मेरे मन को लाभान्वित किया,
भावना धर्म जीवन की मेरी सदा निष्काम हो।
धन्य है यह धरती जहां देव अनुराग सब विकसित हुए,
हित अनुराग सत्य अनुराग का बल पाके,
भगवन जी यहां से रुखसत हुए,
योग्यता अपनी निखारी विज्ञान विधि से,
जैसे सत्य धर्म का इल्हाम हो।
मिथ्या अशुभ के बनके शत्रु,
सत्य शुभ के ही अनुरागी हुए,
ऐसा कोई न आया, धर्म गुरू अब तक,
जिसने अद्वितिय किया संग्राम हो।
उच्च जीवन ही धर्म है, जीकर यह साबित कर दिया,
विज्ञानमूलक सत्य धर्म अद्वितीय ज्ञान से मानव को भर दिया
आत्मा वह अधूरी, अमर क्या होगी?
सुख अनुरागों से जो हई बदनाम हो।
उच्च जीवन है उसी का, जिस पर झूठ पापों का इल्जाम न हो।
आदेश जिसके पढ़के, आदर्श भी था सेवक बन गया,
आठ पापों से पाकर मुक्ति, निज के साधन से सम्भलता मन मेरा
धर्म क्या जिसका उच्च परिवर्तन ही न बना अंजाम हो।

(ओम प्रकाश आदर्श)

धर्म जीवन

खण्ड 28 अंक 10

सम्पादक डा. विनोद खेड़ा | अक्तूबर – 2015 वार्षिक मूल्य 50 रूपये | सह सम्पादिका सुरजीत बराड़

मनुष्य की दौड़

कहावत है कि "मुल्लां की दौड़ मसीता तक" इस प्रकार यदि देखा जाए कि मनुष्य की, या हम मनुष्यों की दौड़ कहां तक है? हम मनुष्यों के जीवन में से क्या कुछ निकलता है? या निकल सकता है? या हम मनुष्य अपनी ज़िन्दगी में क्या कुछ करते हैं? क्या करने में सारा जीवन व्यतीत करते हैं। यह प्रश्न हमारे विचार की मांग करते हैं।

जहां तक मनुष्य की सदा प्रगतिशील दिमाग और योग्यताओं का सम्बन्ध हैं, वह तो नेचर और उसके नियमों की खोज कर करके अपने सुख स्वादों और आराम, सहूलतों के लिए अद्भुत अविष्कार करता है और कर सकता है। उसने पहले भी अनेकों करिश्मे किए हैं और वह सदा ऐसी ही करिश्में करते रहने के लिए पूरी तरह सम्पन्न है। यह करिश्में हर इन्सान के वश में नहीं। दुनियां के कुछ ही गिणती के सांईसदानों के अथाह संग्राम के और कुबार्नियों के कारण ही सम्भव हो सका है।

आम साधारण मनुष्य भी कुछ न कुछ तो जीवन में करता रहता है, इसी में जीवन व्यतीत कर देता है। और उसको इसी में पूर्ण सन्तुष्टि और तृप्ति रहती है। ऐसा करके उसको कोई बुरा नही लगता और कोई घाटा भी महसूस नहीं होता ।

हर मनुष्य को जीने के लिए खाने पीने की जरूरत है। मनुष्य थोड़ी सी खुराक और पानी से अपना गुज़ारा कर सकता है। परन्तु कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं, जो कुछ विशेष भोजन, विशेष पेय खाने पीने के लिए जीते हैं। वह विशेष प्रकार के स्वाददार पदार्थो और खानों के शौकीन और प्रेमक बन जाते हैं। और उनके बिना उनका जीना कोई अर्थ नहीं रखता। मनुष्य की इस चाह को पूरा करने के लिए। भान्ति-भान्ति के स्वादिष्ट व्यंजन बाज़ार में भरे पड़े है। मनुष्यों की भीड़ उसी प्रकार वहां इक्ट्ठी होती है, जैसे गुड़ पर मक्खियां इकट्ठी हो जाती हैं। चाहे वे स्वादिष्ट बरगर, पीज़ा, समोसे, टिकियां, गोल गप्पे, मांस से बने पकवान, तरह-2 की मिठाईयां, और क्या कुछ हैं, उसका वर्णन करना भी कठिन है। और मनुष्य सब कुछ छोड़ जाते हैं, विशेष रूप से खाने के लिए ही जीने लग जाते हैं। एक बहुत भद्र घराने के नौजवान देव समाज की संगत में आ गए, उनके नशे, मांसाहार वा और बहुत से बुरे व्यसन छूट गए। परन्तु अपने खाने पर काबू नहीं पा सके। उनको एक आश्रम में ले जाने के लिए उनकी पत्नी ने सारा खर्चा देकर भेजा था, परन्तु वह हर अच्छे से अच्छे खाने के बाद भी कुछ न कुछ स्वादिष्ट वस्तु अवश्य खाते थे। उसके बिना वह रह नहीं सकते थे।

इसलिए प्रबन्धकों ने उन्हें रास्ते से ही वापिस कर दिया। 55 वर्ष की उमर में 2 नौजवान लड़कियों और एक 12 – 13 वर्ष का लड़का छोड़ असमय मृत्यु का शिकार हो गए। लड़कियों की रिश्तेदारों ने शादियां कर दी। बेटा यह सदमा सहन न कर सका, डिप्रैशन का शिकार हो गया, उसने आत्म घात कर लिया। वह केवल खाने को ही मुख्य रखकर जीते – 2 जीवन पूरा कर गए। उसी प्रकार जो मनुष्य नशे पीने के अभ्यस्त हो जाते हैं, उनको नशे के ईलावा और संसार निर्थरक लगता है।

कुछ मनुष्य सोने के, आराम के, तन परस्ती के बहुत अभ्यस्त हो जाते हैं। अपने तन सुख के लिए ही जीकर संसार छोड़ जाते हैं।

कई जन खेलने के नाचने और ऐसे कई अभ्यासों के पीछे ही जीवन व्यतीत कर देते हैं बड़ी सफलताएं और प्राप्तियां कर लेते हैं और उनके द्वारा धन इक्ट्ठा करने में जीवन व्यतीत कर देते हैं। पहलवान, खिलाड़ी बुढ़ापे तक इसी शौक के गिर्द घूमते रहते हैं, इसी में उनकी उमर पूरी हो जाती है।

कुछ को हंसी, मखौल आदि बहुत आकर्षित करता है। वह हंसी मखौल, गप्पें हांकने में expert होते होते बहुत प्रसिद्ध हो जाते हैं। इसी के लिए ही सारा जीवन व्यतीत कर देते हैं।

धन कमाना सम्पत्ति बनाने का 95 – 96 प्रतिशत, हर स्थान और प्रत्येक देश के लोगों का मुख्य काम बना हुआ है। यह आवश्यक भी है, क्योंकि व्यक्तिगत आवश्यकताएं धन से ही पूरी हो सकती है। रोटी, कपड़े और मकान के लिए धन की आवश्कता है। लेकिन धीरे – धीरे धन कमाना भी एक व्यसन बन जाता है। धन, जायदाद ही जीवन नज़र आने लगता है। धन कमाने से शायद ही कोई आदमी रिटायर हो सकता है। धन है मनुष्य की सेवा के लिए, परन्तु अधिकतर धन की सेवा में ही मनुष्य मात्र लगा हुआ है। मनुष्य धन का गुलाम बन जाता है। धन के द्वारा तरह – 2 के सुख पाने की लालसा बढ़ती जाती है। स्वयं ही नहीं अपनी सन्तान के लिए भी अधिक से अधिक धन छोड़कर जाना चाहते हैं और ऐसा ही करते हैं। आगे सन्तान रिले रेस की तरह अपनी सन्तान के लिए अधिक से अधिक धन छोड़ जाना चाहते हैं। धन के द्वारा कारों, बंगलों और साज समानों के चक्करों से ही निकलना लगभग सारी मानवता के लिए कठिन ही नहीं दिन पर दिन असम्भव होता जाता है। धन के लिए सेहित की बलि मनुष्य खुशी – खुशी देता रहता है। धन कमाने के चक्कर में साधारणत: वह गुणात्मिक काम करने की सोचता तक भी नहीं। कई बार अपने आराम के लिए भी समय नहीं निकाल पाता । आम मनुष्य को जीवन की पूरी सफलता धन अधिक से अधिक कमाने और फिर अपने कमाऊ बच्चों के लिए छोड़ जाने में लगती है। धन के व्यसन के कारण दुनियां में बहुगिणती में अत्याचार वा पाप होते हैं।

मान, बड़ाई, प्रशंसा का आकर्षण बहुत बड़ी गिणती में मनुष्यों को अपना गुलाम बना लेते हैं। मान, सन्मान, वाह – वाह, प्रशंसा का सुख प्रत्येक मनुष्य को आकर्षित करता है, इसलिए इसकी प्राप्ति बड़ी गिणती में कोई मनुष्य भी ऐसा नहीं कि जिसको अपनी बड़ाई, सुखकर न लगती हो। बहुत से मनुष्य मान बड़ाई के अत्यन्त भूखे होकर केवल उसके लिए ही जीने लगते हैं। मनुष्य की इसी भूख ने, मरासी आदि के पेशे को जन्म दिया है। मान बड़ाई के लिए मनुष्य जायदाद और धन को खुशी – खुशी उड़ा देते हैं। एक जाट ने झूठमूठ राजा कहलाने की ललक में अपने सैकड़ो एकड़ जमीन उड़ा दी थी, फिर उसे भिखारी बनना पड़ा। एक बड़ा सरदार बेटी के विवाह पर बारात की गिणती पूछने पर

सरसों की मुटठी दिखाकर कहा कि जितनी चाहो बारात लाओ, इस पर वह बेहिसाब खर्च करके नंग, कंगाल हो गया था।

आजकल कोई साल भर से हमारे देश में दो बातों की बहुत चर्चा है, जिसने हमारे देश को बहुत झटका दिया है। पहला Corruption जिसमें बेईमानी, रिश्वतें आदि अर्थात धन का लालच मनुष्य को किस कदर नीचे गिरा देता है, जिसकी घटनाएं प्रतिदिन हम खबरों में सुनते वा पढ़ते हैं।

दूसरा लिंग तृष्णा (Sex) की गुलामी मनुष्यों द्वारा जो बलात्कार की घिनौनी घटनाएं होती हैं, वह दिल दहला देने वाली हैं। इनकी भीष्णता को शब्दों में ब्यान नहीं किया जा सकता। फ्रांस के एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ने तो मनुष्यों में इस वासना को मनुष्य की प्रधान वासना बताया है। आग की तरह इसकी लपटों ने भी मनुष्य मात्र को चारों तरफ से घेर लिया है। भारत की मूल सभ्यता, जिसमें शर्म हया पवित्रता, इज्जत, पाकीजगी, आम अनछूआ कुंवारापन, जो वर्षो पहले पूजने की वस्तु समझा जाता था, वह इस वासना की आंधी में पूरी तरह बिखर गया है। कुंवारे यौन सम्बन्ध, लड़के लड़कियों की फ्रैंडशिप के चलन के विशाल सागर में छोटी उमर से ही बच्चे अन्धाधुन्ध बहे चले जा रहे हैं। लिंग पवित्रता की कीमत, पिछड़े गंवार लोगों के अजायबघर की शोभा बन रहे हैं।

और निकटी सम्बन्धों की तो बात ही क्या इसने बाप बेटी के रिश्ते को भी गंधला कर दिया है तो सारे अभागे इस वासना को खेल समझते हैं और उसकी पूर्ति को ही अपना लक्ष्य बना लेते हैं। इस वासना के अधीन मनुष्य बाकी सम्बन्धों, सुख स्वादों को भी कुर्बान करने के लिए तत्पर रहते हैं। कई राजपाठों तक को त्याग देते हैं। वह इस वासना की तृप्ति में इतने लीन हो जाते हैं, कि और कोई भली बात करने की ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता।

सुख के कीड़े, सुखों के अनुरागी मनुष्य की सब दौड़ें केवल सुख की प्राप्ति ही हो सकती हैं। मकड़ी के जाले की तरह मनुष्य नीच सुखों का ताना बुन अपने चारों ओर इस तरह बुन लेता है और उसमें इस प्रकार फंस जाता है, जिससे स्वयं को तो दुखों में फंसाता ही है, दूसरों को भी दुखी करता वा तड़पाता है। आखिर इन सुखों की भेंट चढ़कर इस संसार से विदा ले लेता है। कहां मेरी हस्ती की सुरक्षा वा भलाई है, कहां मेरी तबाही है, इस अत्यन्त आवश्यक विषय की ओर ध्यान तक ले जाने में असमर्थ्य हो जाता है। मनुष्य होकर, सब प्राणियों से शिरोमणी होकर, अक्ल की अथाह रोशनी से रोशन होकर, बहुमूल्य खोज का धनी होकर, अपने आप के प्रति कितनी कृपा – पात्र अवस्था में रहने के लिए, अन्धेरा भोगने, घुल घुलकर समाप्त होने के लिए मजबूर हो जाता है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने अपनी पवित्र बाणी में इस विषय पर अद्भुत रोशनी प्रदान की है :-

"करोड़ों मनुष्य अपने आत्मा के सम्बन्ध में कोई सच्चा ज्ञान नहीं रखते और वह केवल खाने पीने, सोने, जागने, खेलने, कूदने, गप्पें मारने, धन कमाने, जायदाद, इज्जत, प्रशंसा वा वाह वाह प्राप्त करने और इंन्द्रिय सम्बन्धी सुखों को चाहने और अपने भिन्न – भिन्न सम्बन्धों में, अपनी मूर्खता, अपने मिथ्या विश्वासों और कुसंस्कारों और भिन्न – भिन्न प्रकार के पापों और अपराधों के द्वारा अपने और दूसरों के लिए महा भयानक हानियां, दुख और कलेश और पीड़ा पहुंचाने के अतिरिक्त और कुछ नही करते। वह जीवनधारी होकर भी अपने अपने अमूल्य जीवन के

विषय में अज्ञानी रहते हैं । वह जीवन रखते हैं, परन्तु नहीं जानते कि जीवन क्या वस्तु है, और व विश्व परिवर्तन सम्बन्धी अटल नियम के अधीन होकर, किस प्रकार बनता और बिगड़ता है, और किस प्रकार बिगड.ते बिगड़ते एक दिन बिल्कुल नष्ट ही हो जाता है। यह ज्ञान उनको नहीं, वह इस महां आवश्यक ज्ञान से खाली हैं। वह अपने ही अस्तित्व के सम्बन्ध में घोर अन्धकार में हैं।

"ऐसे करोड़ो मुनष्य हैं जिनमें (बादशाह और राजे महराजे, विद्वान और मुर्ख, घनी और निर्धन, पुरोहित और उस्ताद और शार्गिद, शिक्षक और विद्यार्थी, शिल्पी और किसान, दुकानदार और व्यापारी, बैरिस्टर और वकील, जज और मजिस्ट्रेट डाक्टर और इंजनियर, गवर्नर और हाकिम आदि, सब प्रकार के लोग शामिल हैं।"

– बलदेव सिंह

क्या हमारा जीवन सफल हो रहा है।

"भगवान तुम्हारे चरणों में, जिसे आने का सौभाग्य मिला, है जीवन सफल हुआ उसका जिसे आपका द्वारा मिला। उस भजन की इन सतरों से यह प्रश्न उठता हैं कि क्या हम सोचते हैं कि हमारा जीवन कहां तक सफल हुआ है? बेशक परम पूजनीय भगवान की पवित्र शरण को पाकर हम मिथ्याओं और मोटे पापों से बच गए है, वहां तक हमारा भला वा रक्षा हुई है, हम इसी से जीवन की सफलता समझने लगते हैं, यह तो वैसे ही है जैसे कोई 2 – 3 जमाते पढ़ जाए, तो वह थोड़ा – 2 पढ़ने, कोई साईन बोर्ड पढ़ने, थोड़ा कोई पत्र पढ़ने के योग्य हो जाता है, परन्तु विद्वान नहीं बन जाता, वह मंज़िल बहुत दूर है, उसी प्रकार यह मोटे पाप वा मिथ्याएं छोड़कर हमारी उसी 2 – 3 जमातें पढ़ने वाले जैसी अवस्था है।

जीवन सफल होने की मंज़िले बहुत आगे और बहुत कठिन हैं। जब हम मिथ्या और मोटे पाप छोड़ देते हैं, तो हम बहुतों से कुछ ऊपर उठ जाते हैं, परन्तु सबसे पहले ये भूल जाते हैं कि जिस संगत और देव प्रभावों में आकर हम इस अवस्था को प्राप्त हुए हैं, वह कितनी कीमती है। अपने संसारिक काम धन्धों के मुकाबले में इसकी कितनी प्राथमिकता है। एक – एक बार संगत में आकर जो अच्छे वलवले पैदा होते हैं। परन्तु संगत से दूर होकर फिर भूल जाते हैं, अपने छोटे – 2 कामों, लाभों, लालचों, दुनियापरस्ती के कामों को अधिक महत्व देते हैं और संगत छोड़ देते हैं।

संगत में मिलने वाले देव प्रभावों के बिना जीवन सफल करने की अगली मंजिले समझ ही नहीं आती। संगत में बैठकर ही हमें पता लगता है कि

(1) श्रद्धा अर्थात दूसरों के गुणों की सराहना और उनको स्वयं ग्रहण करने का यत्न करने से पैदा होती है, यह उच्च भाव मनुष्य को दीन बनाता है और संगत से लाभ उठाने के योग्य बनाता है, श्रद्धा पैदा किए बिना जीवन सफल समझना एक स्वप्न है।

(2) कृतज्ञता – संगत में बैठकर ही हमें कृतज्ञता की सही परिभाषा समझ में आती है। किसी को उपकारी कह देने को कृतज्ञता नही कहते, कृतज्ञता वह उच्च भाव है, जो उपकारी के आगे झुकाता ही नहीं, उपकारियों के लिए कुछ भेंट करने, सेवा करने के लिए मजबूर करता है, उनको कोई दुख नही पहुंचाना चाहता। इस उच्च भाव के पैदा होने से थोड़ा जीवन की

सफलता की ओर हम एक और कदम बढ़ाते हैं।

(3) हमदर्दी – यह भाव बहुत कीमती भाव है। और तुलसीदास जी ने तो कहा है कि "दया धर्म का मूल है" हां, दया भाव बहुत कीमती भाव है, परन्तु दया धर्म का मूल नहीं है क्योंकि दया के भाव से भी मनुष्य गल्त जाता और जा सकता है। परम पूजनीय भगवान की रोशनी में दिखाई देता है कि दया का भाव कहां उचित है, कहां अनुचित। परन्तु यह सत्य है कि दया भावना के बिना मनुष्य राक्षस बन जाता है। दया का भाव दीन, दुखियों, जरूरतमन्दों के लिए कुछ कर गुज़रने का जज़बा पैदा करता है। जितना गहरा भाव यह हमारे भीतर पैदा होगा। उतना ही हम दूसरों की सेवा करने के लिए तत्पर होंगे, उसके लिए अपने धन, तन सुख का त्याग करेंगे। सेवा के बिना जीवन सफल नही होता।

(4) हानि परिशोध – मनुष्य सुख अनुरागी होकर अपनी हानि करने वा दूसरों की हानि करने के लिए मजबूर है। परम पूजनीय भगवान ही अपनी रोशनी में दिखाते है कि हमें न केवल आगे हानिकारक बनने से बचना है, बल्कि पिछले पापों, अर्थात जिन जनों की पशु पक्षियों की निर्जीव जगत की हानि का अपहरण किया हक छीने हैं, अपमान, निरादर किया है उसका परिशोध करना है, उस मैल का निकाले बिना जीवन सफल होने का मार्ग नहीं खुलता। सत्गुरू का ही दरबार है जहां रिश्वत खोरों ने रिश्वतें वापिस की हैं, पशु पक्षियों को मारने वालों ने दाना पानी का उनके लिए प्रबन्ध किया, जिन लड़कियों को मारा जाता था, उनके लिए स्कूल खोले हैं। एक – 2 पति ने अपने पिछले अपराधों के लिए पत्नि के पैरों में पगड़ी रखकर क्षमा – याचना की है। जैसे मैले कपड़े पर रंग नहीं चढ़ता, वैसे ही जिस हृदय में पापों, अपराधों की मैल चढ़ी हुई है उनका परिशोध करना है जिस जीवन में परिशोध का अध्याय यथेष्ट मात्रा में नहीं खुलता जीवन की सफलता उससे कोसों दूर रहती है।

इससे आगे की मंजिल इससे भी कठिन है, जिसका बोध होना अति कठिन है और कोई माई का लाल ही उस तक पहुंच सकता है, वह है अपने अहं का बोध। अहं केवल गुस्सा होना नहीं होता, ऊंचा बोलना ही नहीं होता, इसकी कई शाखाएं हैं। मान, बड़ाई, प्रशंसा, स्वार्थ, पद, प्रभुत्व की भूख, इनकी सही परिभाषा जानने के लिए, हमें पूजनीय देव शास्त्र तीसरा खण्ड का अध्ययन बार – बार करना पड़ेगा, जहां परम पूजनीय भगवान ने एक – 2 भाव के लक्षण और उनके द्वारा होने वाली क्रियाओं का ज्ञान दिया है। इन भावों की तृप्ति के लिए मनुष्य में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा की उत्पत्ति होती है, उनका ज्ञान पाना, बोध पाना और परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को ज़ोरदार रूप में पाकर अहं से यथेष्ट मात्रा तक उद्धार के बिना किसी मनुष्य की देव प्रभावों तक रसाई नहीं हो सकती, न ही वह सच्ची पूजा का साधन ही कर सकता है।

अहं घटने और देव प्रभावों तक रसाई होने से बिना किसी मनुष्य को प्रकृत रूप में देव रूप के दर्शन नहीं हो सकते। ज्यों – ज्यों देव रूप के दर्शन होंगे, वो देव रूप से जोड़ने वाले भावों की उत्पत्ति और विकास होगा।

सत्य मोक्ष की प्राप्ति पाकर इन नीच भावों से सत्य मोक्ष प्राप्त करना मनुष्य की महा कठिन अगली मंजिल है। नीच सुखों वा घृणाओं से सत्य मोक्ष प्राप्त करने के लिए बड़े कठिन साधनों में से गुजरना पड़ता हैं।

सत्य मोक्ष की प्राप्ति के लिए देव प्रभावों की आवश्यकता है। सुख अनुरागी मनुष्य के लिए स्वयं अपने नीच सुखों को देखना, उनको कुछ देखकर भी उससे निकलना सम्भव नहीं। आज सारे संसार में धर्मों का बढ़चढ़ कर प्रचार है, परन्तु किसी का भी लक्ष्य मनुष्य को नीच भावों से निकालना वा उच्च जीवन में विकसित करना नहीं।

देव प्रभावों की प्राप्ति के लिए देव प्रभावों, अर्थात देव ज्योति और देव तेज के स्त्रोत देवात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापन करना अगली मंजिल है। देवात्मा के देव प्रभावों में अटल विश्वास, उनके प्रति अटल श्रद्धा, अटल कृतज्ञता और देव प्रभावों के प्रति आकर्षण से उनके साथ सम्बन्ध स्थापन होता है। इस मंजिल तक पहुंचना महा कठिन, लगभग मनुष्य के लिए असम्भव सा ही है। इन भावों को जानने और उनकी गहराई को अनुभव करने के लिए भी हमें परम पूजनीय भगवान देवात्मा के रचित पूजनीय देव शास्त्र का खण्ड – 3 का ही अध्ययन बार – बार करना होगा। हम मनुष्य मात्र को तो उनका मानसिक ज्ञान भी कठिन है।

इतनी कठिन यह मंजिलें देव समाज के उच्च कर्मचारी कहला कर भी नहीं मिलती। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की पवित्र वर्तमानता में, उनके साक्षात प्रभावों की वर्षा तले बैठकर भी बड़े – 2 योग्य आत्मा गुमराह हो गए थे। हम अभागे मनुष्य मात्र की यही त्रासदी है कि हमारे नीच सुख अनुराग और विशेषकर अहं अनुराग हम पर छाया रहता है। हमें उसका ज्ञान ही नहीं होता।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज ने अपनी ऊँची नौकरी का त्याग किया, शादी का त्याग किया, सरदार हरनाम सिंह जी जैसे पापों में बहे जाते जनों को न केवल बचाया, उन्हें पर सेवा में लगाया, यहां तक कि अपना सबसे योग्य पुत्र श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी गुरू मिशन में भेंट कर दिया, दर्जनों कर्मचारी पैदा किए, ऐसे जन जो दुनियवी लिहाज से भी धनी थे, कोई निचले स्तर के लोगों को नही, उच्च कोटि की योग्यता रखने वाले जनों को समाज का वर्कर बनाया, आज तक उन जैसा समाज में पैदा नहीं हुआ। परन्तु मनुष्य प्रकृति की लीला देखो, गुरू का कारज करते करते उनका भी अंह इतना बढ़ गया कि वह अपने तारणहार गुरू को ही घृणा करने लगे, देव प्रभाव मिलने बन्द हो गए, गुरू के कुछ समझाने पर दुखी होने लगे, परन्तु उनके महा सौभाग्य कि परम पूजनीय भगवान की आत्माओं के लिए गहरी तड़प के प्रभाव उन तक पहुंचे और वह देव प्रभाव ग्रहण करने के योग्य हुए, फिर उन्होंने जो कठिन साधन ग्रहण किए, जिस प्रकार अपनी नीचता को देखा और उसे प्रतिदिन लिखना शुरू किया उन्होंने इस कठिन मंजिल को प्राप्त कर किया, जहां उनके भीतर सब प्रकार की नीच चिन्ताएं वा क्रियाएं बन्द हो गई, उन्होंने गुरू की निकटता प्राप्त की और सदा के लिए गुरू के देव प्रभावों को प्राप्त करने का उनका मार्ग खुल गया।

उनका जीवन एक रोशन मिनार है, अधिकारी और सत्य मोक्ष प्राप्त करने के अभिलाषी जनों का सदा मार्ग दर्शन करता रहेगा।

हम मनुष्यों के लिए वहां तक पहुंचना बहुत कठिन है, परन्तु हम इस ओर कुछ भी कदम बढ़ाएं तो हमारा जीवन सफल हो सकता है।

ईमानदारी कहां खो गई

हमारे देश में ईमानदारी का अकाल पड़ा हुआ है। हमारे देश बेईमानी की लिस्ट में सबसे नीचे स्तर के देशों में आता है। जैसे भौतिकवाद का सम्राज्य बढ़ रहा है, सुख सुविधाओं की ललक बढ़ रही है, धन एकत्र करने की लालसा का अधिकार बढ़ रहा है, वैसे–2 ईमानदारी कफूर हो रही है। बड़े–2 नेता जिनके पास चलाने को साईकल तक नहीं था, वह आज हज़ारों करोड़ों की सम्पत्ति के मालिक हैं। राजनैतिक नेताओं ने तो बेईमानी के रिकार्ड तोड़ दिए हैं। बड़े–2 उद्योगपति टैक्स का ठीक भुगतान न करके, मज़दूरों का शोषण करके अपने घर भर रहे हैं। खाने की वस्तुओं की मिलावट ने तो देशवासियों को रोगी बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पैर पैर पर आपका वास्ता बेईमानों से पड़ता है। पैसा लिए बिना किसी दफ्तर में काम नहीं होता। चपरासी से लेकर ऊपर के अफसरों तक भेंट चढ़ानी पड़ती है। पुलिस जिसका कर्तव्य हमारी रक्षा करना है, पैसा लेकर बड़े से बड़े मुलजिमों को छोड़ देते हैं और गरीब को फंसा देते हैं। वास्तव में हमारी अर्न्तात्मा मर चुकी हैं। पैसे के आगे किसी का दुख दर्द नज़र नहीं आता।

हर सरकार में बेईमान भरे पड़े हैं, इसलिए वह कानून ही ऐसे बनाते हैं जिनसे उन्हें वा उन्हें पैसे चढ़ाने वालों का लाभ हो। आप कोई ज़मीन, प्लाट, घर बेचते हो तो रजिस्ट्री कम पैसों में होती है, जो चैक या ड्राफ्ट के द्वारा होती है, बाकी का कैश पैसा देना पड़ता है। कैश सारा काला धन होता है। जिनके पास काला धन नहीं, उनको इधर–उधर से सफेद धन को काला बनाकर देना पड़ता है। अब इसमें जो कोई लोग विदेश में हैं, उनका पूरा पैसा उनको नहीं मिलता जिनके पास पावर आफ अर्टानी है, वह कैश में से बहुत सा पैसा स्वयं रख लेते हैं उसका कोई लेखा जोखा नहीं होता। संस्थानों की प्रापर्टीज़ बेची जाती हैं, यदि उनके पदधारियों को बहु–गिणती है तो वह चैक वाला पैसा जमा करवाकर, कैश मिल बांटकर खा लेते हैं। किसी को कानों कान खबर नहीं होती। यदि सरकार मार्केट रेट पर रजिस्ट्री स्वीकार करे और रजिस्ट्री फीस कम कर दे, तो यह धांधलिया समाप्त हो जाएं। कालिजों स्कूलों के होस्टलों में बच्चों से अधिक पैसे लिए जाते हैं और खाने के ठेकेदार को कम पैसे देकर बाकी पैसा अधिकरियों के खाते में चला जाता है। बिल्डिंग बनाने, सड़के बनाने में झूठे बिल बनाकर पैसा बटोरा जाता है। ऐसा लगता है कि बेईमानी करने का कानूनी अधिकार मिल चुका है। यह घातक बिमारी खत्म होनी प्राय: असम्भव लगती है।

बड़े–2 सम्पन्न देशों में भी बेईमानी की घटनाएं हैं, परन्तु वह ऊपर के स्तर पर हैं, इसलिए आम जनता का जीवन प्रभावित नहीं होता, परन्तु ज़माखोरी और बेईमानी से हमारे देशवासियों का जीवन दूभर हो गया है।

जहां–जहां कहीं ईमानदारी की घटनाएं सुनने में आती हैं, तो हैरानी होती है। पिछले ही दिनों में रिक्शाचालक ने बहुत सा धन जो मालिक रिक्शा में भूल गया था उसे वापिस किया, गरीब तबके में भी ऐसे गज़ब के अजूबे होते हैं।

पिछले दिनों हमारे बहुत माननिय श्रेष्ट जीवनधारी पूर्व राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम जी का देहान्त हुआ, वह जिस उच्च कोटि की मान्सिक योग्यता रखते थे, उसी प्रकार उनके दिल की कोमलता, सच्चाई और ईमानदारी का भी कोई मूल्य नहीं था। वह एक गरीब घर के दिल के लिहाज़ से अमीर पुत्र थे। उन्होंने अपनी कर्मनिष्ठता से जिस मुकाम को प्राप्त किया, वह एक आसाधारण घटना है। इतने बड़े पद पर पहुंच कर भी उन्होंने अपनी सादगी और ईमानदारी को कायम

रखा। दुनियावी कोई लालच उन्हें छू तक नहीं गया। आज के युग में जहां एक–2 उच्च पदधारी स्वयं ही अथाह लाभ नहीं उठाता बल्कि अपने बच्चों, सहयागियों को भी लाभ पहुंचाने की कसर नहीं छोड़ता, वहां श्री अब्दुल कलाम जी जैसे ईमानदार नेता भी हमारी शान हैं। एक बार राजभवन में उनके बहुत से रिश्तेदार, भाई बन्धु कुछ दिनों के लिए ठहरे, उनके जाने के बाद उन्होंने इंचार्ज को बुलाया और पूछा इन दिनों में उन पर कितना खर्च हुआ है, उनके ज़ोर देने पर उसे बताना पड़ा, तो जितना खर्च हुआ था उन्होंने अपने अकाउंटस से सरकारी खज़ाने में जमा करवा दिया। क्या शानदार ईमानदारी थी। आज के भारतीय जनों से उसकी तुलना करना भी उनकी शान के विरूद्ध है।

इसी प्रकार लालबहादुर शास्त्री जी भी बहुत गरीब परिवार से थे, देश की आज़ादी में उनका भी बड़ा योगदान था। जब आज़ादी मिली, उसके कुछ समय बाद उनको रेलमन्त्री बनाया गया, और एक दुर्घटना घटी गाड़ियों का ऐक्सीडैन्ट हो गया उनका इसमें कोई कसूर नहीं था, परन्तु उन्होंने तुरन्त मन्त्री पद से इस्तीफा दे दिया। जिन कुर्सियों को हासिल करने और उस पर चिपके रहने के लिए लोग क्या–2 अपराध नहीं करते, क्या–2 षड़यन्त्र नहीं रचते उन्होंने एक पल में त्याग दिया। इससे भी बढ़कर उनका एक और दृष्टांत है। उनको उस समय 50 रूपये महवार मिलते थे। एक दिन उसकी पत्नी के पास उन्होंने बचे हुए 5 रूपये देखे तो पूछा कि यह कहां से आए, उन्होंने कहा कि यह घर खर्चे से बचाए हैं, उन्होंने तुरन्त सरकार को लिख दिया कि मुझे 50 रूपये नही 45 रुपये महवार दिए जाएं, क्योंकि मेरा गुज़ारा 45 रुपये में हो सकता है। क्या शानदार ईमानदारी थी। ऐसा जन कभी अपने पद का लाभ उठा सकता है?

महात्मा गांधी अपनी सच्चाई और ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध हैं। पहले तो उनका देश के लिए त्याग ही बेहद सराहनिय है। अपने देशवासियों की गरीबी, गुलामी देखकर न केवल उन्होंने अपना शानदार कैरियर छोड़ दिया, बल्कि कपड़े भी त्याग कर एक लंगोटी पहन ली। साबरमती आश्रम में रहने के दिनों में जब उनके बच्चे, पोते, पोतियां रहने के लिए आते तो उनका खर्चा वह स्वयं देते, आश्रम पर कोई बोझ नहीं डालते थे। यही ईमानदारी का तकाज़ा है। ऐसे ईमानदार आदमियों को कापी करने का भी हौसला आज के युग में किसी विरले में ही हैं।

ऐसे बेईमान देश के भीतर परमपूजनीय भगवान का आर्विभाव हुआ, जिन्होंने मानवता को पापों मिथ्याओं से बचाने के लिए ब्रत धारण किया। अपनी पहली श्रेणी के सेवकों के लिए भी यह प्रतिज्ञा रखवकर कि बेईमानी नहीं करेंगे, रिश्वत नहीं लेंगे, अमानत में ख्यानत नहीं करेंगे, एक ऐसी जमात खड़ी कर दी, जिसके उदाहरण दुनियां में मिलने कठिन हैं। यही नहीं कि आगे से ऐसा नहीं करेंगे, बल्कि पिछले मारे हुए कर्जे, रिश्वतें तहदिल से क्षमा–प्रार्थना के साथ वापिस करवाएं हैं। यह काम दुनियां में कहीं नहीं हो रहा। तहसीलदारों, पटवारियों, थानेदारों को इस योग्य बनाया कि उन्होंने हाथ जोड़कर क्षमाशील होकर ली हुई रिश्वतें वापिस की थी। आज की दुनियां में यह एक अजूबा है। एक–2 तहसीलदार अपनी घोड़ी का मुंह बांधकर चलता था, ताकि किसी किसान के खेत से उसकी घोड़ी कुछ न खा सके। उनकी ईमानदारी अंग्रेज अफसर भी कायल थे, उन्होंने उनको उनकी ईमानदारी के इवज़ में न केवल मुरब्बे अलाट किए बल्कि उन्हें "फरिश्ता तहसीलदार" के नाम से निवाजा।

रेलगाड़ी में कोई गहनों की गठरी भूल जाता है, एक सेवक उस गठरी को लेकर उसी स्टेशन पर उतरकर बैठ जाता है, मालिक बदहवास वहां पर पहुंचता

है, वह हैरान रह जाता है जब वह सेवक उसकी बदहाली देखकर और निश्चय करके वही गठरी उसे सौंप देता है।

हमारी आँखों के सामने विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान मनोहर लाल जी हुए हैं, जो किचन की आग पर शेव के लिए पानी गर्म करते थे, तो उसके पैसे जमा करवाते थे। किसी की साबुन की बची हुई छोटी सी टुकड़ी से हाथ धोने पर परिशोध किया कि मैं बेईमान बन गया। किसी दुकानदार से चीज़ को हाथ में नहीं लेते थे पहले उसे पैसे देते थे।

'अफसोस' कि पू0 भगवान का पैदा किया हुआ वह Standard गिर गया है, अब समाज और सस्थाओं के पैसों का प्रयोग करना अपना अधिकार समझा जाता है। उन पैसों से ऐश, आराम करने को धर्म समझा जा रहा है। परम पूजनीय भगवान के देव प्रभावों के बिना नीच सुख अनुरागी मनुष्यों का यही हशर होना था, जो हो रहा है। हम सेवकों का यह परम कर्तव्य है कि हम उपरोक्त धर्म सम्बन्धियों की उदाहरणों को याद करके, उनके बताए मार्ग पर चलने का प्रयत्न करें, उसे सुनहरे इतिहास को फिर दोहराएं, ताकि इस दुनिया से ईमानदारी की मिसाल बनकर जाएं, दुनियां के सुखों के पीछे लगकर बेईमान बनकर पछताते हुए न जाएं।

– सुरजीत बराड़

बहार

जीवन में एक दिन नहीं आती।

महान वैज्ञानिक थॉमस एडिसन, विद्यालय में महज तीन महीने हि नियमित रूप से पढ़ पाए, क्योंकि वह ऊंचा सुनते थे, और सहपाठी बच्चों के बीच उनकी हरकतें मूर्खता भरी लगती थीं। वह अपने अध्यापकों द्वारा बोला गया सुन शब्द नहीं पाते थे। एक दिन शिक्षिक ने उनकी डायरी में एक नोट लिख कर उनकी मां के पास भेजा । जिसमे लिखा था 'आपका बेटा बेवकूफ है' इसे स्कूल से निकाल लीजिये।'

मां ने निश्चय किया कि अपने बेटे को वह स्वयं हि पढ़ाएगी। आज हम जिस एडिसन को जानते है, उसके नाम हज़ार से भी ज्यादा वस्तुओं के पेटेंट दर्ज हैं। बचपन में मूर्खों की सी हरकतें करने वाला यह बालक कितना दृढ़ – प्रतिज्ञ था, यह इस बात से पता चलता है कि 1914 में जब एडिसन की फैक्टरी जल कर खाक हो गई, तो अपनी जीवन भर की जमा पूंजी को राख होते देख कर उन्होंने कहा था, "विनाश की भी एक सार्थकता होती है। फैक्टरी के साथ – साथ हमारे अतीत की सारी गलतियां भी जल कर राख हो गई। अब हम एक नई शुरूआत करेंगे।" और केवल तीन हफ्तों के अन्दर अन्दर उनका "फोन" का अविष्कार विश्व के सामने आ गया। ऐसे कई उदाहरण हैं जो बताते हैं कि मनुष्य की इच्छा – शक्ति यदि बलवान हो, तो किसी भी अवरोध में ताकत नहीं कि उसका मार्ग रोक सके। अवरोध अज्ञात का हो, या भय का हो, धनाभाव का हो, या कोई और। मनुष्य अपनी इच्छा – शक्ति के बलबूते असंभव से दिखने वाले कार्य भी कर जाता है। अन्यथा और हरदोल से पहले किसने सोचा होगा, कि सरकंडे से बनी नाव में समूचा महासागर पार किया जा सकता है।

"जीवन साधन और संग्राम की वस्तु है" – यह मनुष्य सृष्टी के सरताज परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की देव – वाणी से निकले हुए स्वर्णिम तथा जीवन्त – शब्द हैं, जिनका सबसे बड़ा प्रमाण उनका अपना देव – जीवन है। इसलिए लगातार कोशिश और अच्छे से अच्छा करते रहने का नाम ही जीवन है। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि हम अच्छे से अच्छा कैसे कर पाएंगे। उत्तर बिल्कुल साफ हैं – किसी ऐसे व्यक्तित्व के संपर्क में या उसके निकट रहने का लगातार प्रयास करते रहें जो हमें ही हमारी कमज़ोरियों से ऊपर आने में सहायता कर सकता हो, तथा जीवन में सर्वांग विकास की प्रबलतम प्रेरणाएं तथा इस मार्ग पर चलने की शक्ति

दे सकता हो।

मनुष्य का एक मात्र प्रकृति-मूलक सत्य-लक्ष्य है अपनी आत्मिक-गठन (जो कि बहुत अधूरी तथा रोग-ग्रस्त हैं) से ऊपर उठ कर अपने अस्तित्व (विशेषकर आत्मा को) स्वस्थ तथा उसकी गठन को पूर्ण बनाना। श्रद्धया डाक्टर प्रेम देवी जी ने परलोक सन्देश में एक स्थान फरमाया है कि - इस उद्देश्य की प्राप्ति का सबसे आसान तरीका है -सत्संग में शामिल होकर हार्दिक सहयोग देना । जो व्यक्ति सबसे आसान तरीका भी नही अपना सकता, उसका भला नहीं हो सकता। इस लक्ष्य की प्राप्ति में जो भी सहायक हो सकता हो, उसकी संगत करना, और सबसे बढ़ कर परम पूजनीय भगवान देवात्मा को अपने हृदय पर अधिकार देना। हम आत्म-हित की आकांक्षा को लेकर जो भी चिंतन करें, जो भी कार्य करें, उन सब में भगवान् देवात्मा को अपना भागीदार बनाने का प्रयास करते रहा करें, तो यह समस्या बहुत आसान हो जाएगी। एक बार एक समाचार पत्र में एक बहुत दिलचस्प कथा पढी थी: -

किसी अरब देश के रेगिस्तान में एक अमीर के पास 19 ऊँट थे। उसके तीन बेटे थे। वह व्यक्ति जब मरने वाला था, तब उसने अपने तीनो बेटों को पास बुलाया और कहा कि पच्चास प्रतिशत ऊँट सबसे बड़ा बेटा लेगा, पच्चीस प्रतिशत ऊँट मंझला बेटा लेगा, और शेष बीस प्रतिशत ऊँट सबसे छोटा बेटा लेगा। जब उस व्यक्ति की मृत्यु हुई, तो सारे गाँव वाले इक्ट्ठे हो गए और ऊँटों को तयशुदा वसीयत के अनुसार बांटने के लिए एक बहुत ही समझदार व्यक्ति को कार्य सौंप दिया। ऊंटों का बटवारा करने वाले की बुद्धि इस समस्या को हल नही कर सकी, क्योंकि ऊँटों के बांटने का हिसाब किसी भी तरह ठीक नहीं बैठ रहा था। किसी को यह बात समझ नहीं आ रही थी कि 19 ऊँटों को 50:25:20 के अनुपात से पूरे पूरे कैसे बांटा जाए। सुबह से सांझ हो गई, सारा गाँव सिर पकड़ कर बैठ गया, लेकिन समस्या किसी से सुलझ नही पाई।

जब शाम के समय एक राहगीर अपने ऊँट पर उस भीड़ के बगल से गुजर रहा था, तो उसने एक व्यक्ति को अपने पास बुलाकर पूछा कि भाई क्या माजरा है इतनी भीड़ क्यों लगी हुई है? क्या यहाँ कोई दुर्घटना हो गई? सारा माजरा समझने के बाद वह राहगीर कुछ सोचने लगा, और कुछ देर बाद बोला, भाई मुझे थोड़ा समय दो, शायद इस समस्या को हल करने में मैं आपकी कुछ सहायता कर सकूं। गाँव वाले यह सुन कर हंसने लगे। एक जन ने कहा कि आओ भाई, आओ, आप भी अपनी बुद्धि का परिक्षण कर लो। उस राहगीर ने कहा, सारे ऊँट मेरे सामने लाओ। सारे ऊंट उस के सामने कतार में खड़े कर दिए गए, जो गिनती में 19 थे। राहगीर ने उनको फिर से गिना और अपना ऊँट भी उनमें मिला दिया, और इस प्रकार कुछ 20 ऊँट हो गए। तत्पश्चात उसने सब ऊँटों को 50:25:20 के अनुपात से जो कुल हिसाब से (19=4 + 5 + 10) तीनों भाईयों में बाँट दिया । एक ऊँट फिर भी बच गया, जो उसका अपना था, जिसे लेकर वह राहगीर अपने रस्ते चलता बना।

प्रिय मित्रों। हमारे आत्मिक - जीवन की समस्या भी ऐसी हि है जैसा कि 19 ऊंटों का बंटवारा। इस पहेली को भगवान् देवात्मा के अतिरिक्त न कोई समझ पाया और न उसका समाधान हि दे पाया। यदि हम भगवान् देवात्मा को अपने साधनों और सब हितकर कार्यों में भागीदार बना लिया करें, तो हम जीवन तथा धर्म-विषयक बहुत बड़ी समस्या का बड़ी आसानी से समाधान पा सकते हैं। पूजनीय भगवान् को हमेशा याद रखें, जब भी जीवन में कोई समस्या आए, तो देखने का प्रयास करें कि क्या ऐसी हि समस्या भगवान् के जीवन में कभी आई थी? यदि हाँ, तो उन्होंने क्या समाधान किया था? बस, यदि हम उनकी केवल नकल भर करने का सच्चा साधन कर लेंगे, तो वह समस्या अवश्य कि एक न एक दिन काफूर हो जाएगी। हमारे मनुष्य जीवन में उच्च-रस भी आएगा, तथा बहार भी आएगी। काश! हम भगवान देवात्मा को अपने हृदय पर पूर्ण अधिकार दे सकें।

(चन्द्र गुप्त)
अम्बाला शहर

मिथ्या विश्वासों का माया जाल

मिथ्या विश्वासों के द्वारा जो भयानक तबाही मची हुई है, धार्मिक स्थान जिस प्रकार पाप, बलात्कार, कत्ल के अड्डे बने हुए हैं, उनके विषय में कुछ विचार नीचे दिए जाते हैं

श्रीमान चन्द्रगुप्त जी लिखते हैं : –

आज इन बाबा लोगों की जो धडल्ले से दुकाने चल रही हैं, उनके लिए केवल ये तथाकथित सन्त ही नहीं हमारी भोली भाली जनता समाचार पत्र टी.वी. चैनल तथा सबसे बढ़कर सरकार अपराधी है। भारत की धर्म भीरु होने के साथ – 2 सहज विश्वासी भी है, यह किसी भी चोर उचक्के की धर्म के नाम पर की गई बात पर शीघ्र विश्वास कर लेती हैं, और अपना आप उसके चरणों में भेंट चढ़ा देती है। किसी मनुष्य को कभी सहज – विश्वासी नहीं होना चाहिए। सरकार का सबसे बड़ा दोष यह है कि यह जनता में वैज्ञानिक – मनोवृति को उत्पन्न तथा विकसित नहीं कर रही।

प्रत्येक मनुष्य जन्मजात स्वार्थी, सुख – परायण तथा दु:ख से बचने को गहरी लालसाएं लिए होता हैं। अत: इस प्रकार के बाबा लोग मनुष्य की इन दुर्बलताओं को भुनाने के लिए सदा पैदा होते रहे हैं ओर पैदा होते रहेंगे। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के अस्तित्व में उसके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण उसका अपना जीवन अर्थात आत्मा है, इसलिए आत्मा का विज्ञानमूलक सत्य – ज्ञान प्रत्येक मनुष्य के लिए परमावश्यक है। आगे साधारण लोगों की तो बात छोड़ ही दें, विशेष – विशेष बहुत पढ़े लिखे विद्वान् तथा संसार को अपने इशारों पर चलाने वाले जनों के पास भी अपना विज्ञान – मूलक सत्य आत्म – ज्ञान नहीं हैं। मैं कितने ही लोगों से अक्सर पूछता रहता हूँ, कि आप ज़िंदा क्यों हैं? बहुत अफसोस। कोई संतोष जनक उतर नहीं दे पाता। अत: ऐसा मानसिक – दशा के किसी भी व्यक्ति को उससे अधिक बुद्धि वाला जन कभी भी ठग सकता है और पूरे संसार में यही हो रहा है।

जिस तरह चिकित्सा – विज्ञान हमारे शारीरिक – स्वास्थ्य की व्यवस्था का नाम है। ठीक उसी तरह विज्ञान – मूलक धर्म – विज्ञान हमारी जीवनी – शक्ति अर्थात आत्मा के स्वास्थ्य की व्यवस्था का नाम है।

इसलिए मनुष्य – समाज की आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है विज्ञान – मूलक सत्य धर्म तथा ऐसा गुरू जो इन सब मानवीय दुर्बलताओं से पूरी तरह मुक्त हो। तथा मनुष्य को जीवन की सही दिशा दे सके।

सरकार को भी यह चाहिए कि वह प्रत्येक धर्म/मत, तथा डेरों आदि की धार्मिक – शिक्षा को छोड़ कर, उनके बाकी सब मामलात (यानी ज़मीन – जायदाद, रुपया, पैसा, प्रशासनिक तथा अन्य मामलों) पर गहरी दृष्टि रखे तथा समय समय पर उनकी जांच – पड़ताल तथा आडिट करती रहा करे। तथा सब धर्मों के (शिक्षा को छोड़ कर) बाकि सब मामलात को R.T.I. Act-2005 के अधीन लाये ताकि पारदर्शिता बनी रह सके।

काश! वह दिन शीघ्र से शीघ्र आये, जब हम ऐसी व्यवस्था को देख सकें।

श्रीमान किशन सिंह जी चौहान लिखते है : –

उत्तर प्रदेश में मिथ्या विश्वासियों का साम्राज्य है। कई वर्ष पूर्व जैसा हममें से कईयों को ज्ञात होगा कि एक पुलिस के डी – आई – जी राधा के वेश में चूढ़ियां पहनते, सन्दूर लगाते, राधा की तरह कपड़े पहनते और इतने ऊंचे पद होकर भी राधा बने रहते, आखिर उन्हें

नौकरी से निकाल दिया, परिवार बिछुड़ गया बर्बाद होकर भी उन्हें कुछ समझ नहीं आया।

श्री अकबरपुर में मिथ्या विश्वासों का इतना बोलबाला है कि लाख कोशिश करने पर भी मिथ्या विश्वासी बढ़ते ही जा रहे हैं। दुनियां में लोगों ने परोपकार के काम तो किए, परन्तु मिथ्या विश्वासों को दूर करने का काम परम पूजनीय भगवान देवात्मा के बिना किसी ने नहीं किया। हमारे देव समाजी भी कई स्थानों पर जुबान बन्द रखते हैं।

कानपुर देहात में एक जन तन्त्र मन्त्र के चक्करों में पड़कर पागल हो गया और अपनी मासूम बेटी की बलि चढ़ा दी। यह घटना इस प्रकार है : –

बेटी की निर्ममतापूर्ण बलि चढ़ाने वाले कलियुगी पति पर लिखवाया हत्या का मुकदमा

सिकंदरा (कानपुर देहात), 6 सितंबर। बीत शनिवार देर शाम करीब1.30 बजे सनकी बाप द्वारा तंत्र मंत्र के उद्देश्य को लेकर अपनी ही 11 वर्षीय पुत्री को बलि के भेंट चढ़ाकर उसका खून पिया। घटनास्थल पर सूप, सिंदूर, चंदन की लकड़ी व अगरबत्ती बलि देने के सबूत दे रही थी। रविवार के दिन सनकी व्यक्ति गिरजेश पाल पुत्र मदनगोपाल की पत्नी सुनीता पाल ने थाना पुलिस को घटना के बाबत पुत्री द्वारा पैसे मांगने पर हथौड़े व हैंडपंप के हत्थे से वार करके पुत्री को जान से मारने की बात बताकर धारा 302 आईपीसी के तहत मामला दर्ज कराया है। थाना पुलिस ने शव का पंचनामा भरवाकर पोस्टमार्टम के लिये भिजवाया है।

सिकंदरा थाना क्षेत्र केक जमौर गांव के रहने वाले गिरजेश पाल की इस करतूत से जहां घर परविार में मातम छा गया। वहीं ग्रामीणो की चर्चाये बता रही थी कि वर्षो से गिरजेश पाल की हरकते गांव में दहशत व्याप्त किये हुई थी। ग्रामीणों की माने तो गिरजेश पाल 7 इंच का नंगा चाकू लेकर हर समय घूमता रहता था । इस कारण शाम होते ही गांव में सन्नाटा पसर जाता था। हर कोई अकेले जाने की हिम्मत नही जुटाता था। एक दूसरे के सहारे ही लोग आते जाते थे। गर्मी के इस भीषण दौर में ग्रामीण अपने घरों के अंदर परिवार के साथ सोते थे। जिसको लेकर ग्रामीणों ने विद्युत विभाग के जेई हरिप्रकाश से लेकर कई लोगों के ऊपर अचानक हमलों की दास्तान बताते हुए कह रहे थे कि पुत्री की बलि देने के बाद बड़े पुत्र अंकित की भी बलि देने की बात गिरजेश बेखौफ कह रहा था। जिसको लेकर ग्रामीण थाना पुलिस के समक्ष उक्त राक्षस को गांव से ले जाने की गुहार थाना पुलिस में लगा रहे थे। हत्यारे पति की करतूत से पत्नी सुनीता पाल जब गिरजेश पाल को एक पल के लिये भी खुला घूमता देखना नही चाहती थी। इसीलिये गांव वालों के साथ रविवार के दिन उसने थाना पुलिस को पुत्री की हत्या करने के मामले में तहरीर देते हुये उसके खिलाफ धारा 302 आईपीसी के तहत मामला दर्ज कराया। उसका कहना था कि बाकी जिंदगी अपने पुत्र अंकित व अमन के साथ जीना बेहतर समझ रही थी और मृतक पुत्री खुशी के शव से चिपटकर अपनी किस्मत पर आंसू भी बहा रही थी।

मुझे भी अभी अभी हुई घटनाओं ने बहुत दुखी रखा है। हम पढ़ते रहते हैं कि तीर्थ यात्रा पर जाने वाले यात्रियों से किस प्रकार कितने स्थानों पर दुर्घटनाएं होती हैं। हमारे स्कूल की एक अध्यापिका के पति रिटायर हुए और इस खुशी में अमरनाथ की यात्रा के लिए गए और वहां एक वर्ष बर्फ का बहुत बड़ा तुफान आया और उसमें ही अपनी जान गंवा बैठे, परन्तु कितनी जानों के चले जाने पर भी यह समझ नही आता कि जो देवी देवता,

अल्ला, वाहगुरू अपने भक्तों की रक्षा नहीं कर सकता और क्या करेगा। ऐसी ही एक घटना पिछले दिनों सऊदी अरब में घटी है जो इस प्रकार है : –

मक्का की मस्जिद में क्रेन गिरना

'अल्लाह का करम'

जिन्होंने फिल्म 'ओ माइ गॉड' देखी है, उन्हें 'एक्ट ऑफ, गॉड' भी याद होगा। किस तरह बीमा कंपनियां एक्ट ऑफ गॉड कह कर बीमा राशि देने से इनकार करती हैं। सऊदी अरब में हज के सबसे बड़े धर्मस्थल ग्रैंड मस्जिद में भी कुछ ऐसा ही हुआ है। मस्जिद के इलाके में कंस्ट्रक्शन का काम देखने वाले बिन लादेन ग्रुप के इंजीनियर ने कहा कि हादसे की वजह टेक्निकल इश्यू नहीं है और न ही किसी इंसान की गलती का नतीजा। मैं सिर्फ इतना कह सकता हूं कि जो कुछ हुआ वो इंसान की क्षमता के बाहर की चीज है। मेरी जानकारी में यह एक्ट ऑफ गॉड (अल्लाह की मर्जी) है।

इस इंजीनियर के मुताबिक, जो क्रेन टूटी, उसे बेहद प्रोफेशनल ढंग से इन्स्टॉल किया गया था। यह कंपनी आतंकी संगठन अल – कायदा के सरगना लादेन के परिवार से जुड़ी है। बता दें कि मक्का आने वाले हज यात्री काबा का चक्कर लगाते हैं। इस इलाके के विस्तार के लिए यह क्रेन लगाई गई थी । इस हादसे में दो भारतीय सहित 107 लोग मारे गए और 200 से ज्यादा घायल हुए हैं।

25 सितम्बर को मक्का में ही जब आख़िर शैतान नामक एक दिवार पर हाजी पत्थर फैंक रहे थे, तो इतनी आने जाने वालों की भीड़ हो गई कि भगदड़ में 700 से अधिक जनों की मौत हो गई और बहुत से ज़ख्मी हो गए। अब भी यही कहेंगे कि यह एक्ट आफ गौड है। क्या अल्ला या खुदा इतना बेरहम हो सकता है कि उनकी पूजा करने जो उसके भक्त आते हैं, वह उन्हें बेरहमी से कुचले जाने दे। बहुत बार धर्म स्थानों पर दुर्घटनाएं घटती हैं, परन्तु उसे ईश्वर, अल्ला वाहगुरू की मर्ज़ी समझकर जनता शान्त हो जाती है, कोई प्रश्न नहीं करता कि सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, दयालू ईश्वर वा खुदा उस समय क्यों तमाशा देख रहा था?

सारी दुनियां में मिथ्या विश्वासों ने ऐसा जाल बिछा रखा है कि मानवता के दिमागो़ को सोचने समझने के योग्य ही नहीं छोड़ा। ऐसी मानवता की दुर्दशा पर आंसू ही बहाए जा सकते हैं।

सुरजीत बराड़

श्रेष्ठ होना दूसरों को इन्सान के रूप में स्वीकार करना है

यह मनुष्य की जैविक (Biological) आवश्यकता है कि वह जीवित रहे और उसके जैविक आवेगों और लालसाओं की पुर्ति हो। इसके पश्चात् उसकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकता है कि उसे एक व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाए। यह इतनी ही साग्रह और तीव्र आवश्यकता है जितनी कि भोजन की, वस्त्रों की और सिर ढकने के एक आश्रय स्थान की आवश्यकता पड़ती है। हम किसी व्यक्ति को मनुष्य के रूप में तब स्वीकृति देते हैं जब उसके प्रति अच्छा व्यवहार करते हैं, उसकी आवश्यकताओं के प्रति ध्यान रखते हैं और उनका लिहाज करते हैं और उसके साथ आत्मीयता प्रदर्शन करते हैं।

एक महिला प्रवक्ता ने एक बार बड़े कष्ट और क्रोध से कहा कि मैं अपनी प्रधानाचार्य के कार्यालय में तब तक नहीं जाऊँगी जब तक वह मुझे नहीं बुलायेंगी। वह मेरे अभिवादन की उपेक्षा करती हैं। वह मुझे स्थान ग्रहण करने के लिए नहीं कहतीं, जब मैं उनके दफ्तर में जाती हूँ। मेरी ओर कोई ध्यान न देकर केवल अपने लिपिक (क्लर्क) से बात करती रहती हैं। प्रधानाचार्या की अभद्रता के व्यवहार ने महिला प्रवक्ता को उससे अलग कर दिया।

एक माता है जो अपने पुत्र के पास जाकर रहने में अत्यन्त अरुचि और अनिच्छा प्रकट करती है। उसका कहना है कि मुझे वहाँ जीवन की सब सुख सुविधाएं प्राप्त हैं। परन्तु मुझे वहाँ अपने पुत्र के द्वारा आदर नहीं मिलता, इसलिए मुझे वहाँ जाकर रहने में बिल्कुल भी प्रसन्नता नहीं होती।

मैं एक प्रतिष्ठित लेखक एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता को जानता हूँ जिसे सामाजिक समुदाय में बड़ा सम्मान प्राप्त है। उसका साहित्य और सामाजिक सुधार के कामों में काफी योगदान है परन्तु उसकी पत्नी में उसके प्रति सम्मान भाव का अभाव है। वह उसके प्रति आदर प्रदर्शन नहीं करती। बच्चे भी अपनी माता का अनुकरण करते हैं। उसने बहुत पीड़ा से मुझे बताया कि किस प्रकार सबसे छोटा बच्चा भी उसके प्रति गुस्ताख रहने का साहस करता है और गाली देने की धृष्टता भी करता है। मैं अपने ही घर में निष्कासित (पराया) सा अनुभव करता हूँ। बहुत दुख के साथ उसने यह बात कही, वह कई–कई महीनों तक इसी लिए घर से बाहर रहता है।

हममें से प्रत्येक को यह निजी अनुभव अवश्य है कि जब हम अपने किसी सम्बन्धी, मित्र अथवा अपने से बड़े के पास जाते है और उनका व्यवहार हमारे प्रति ठीक नहीं होता, तब हमें कितनी पीड़ा होती है। तब हम यह अनुभव करते हैं कि हमें इन्सान के रुप में स्वीकार नहीं किया गया और मान्यता नहीं दी गई।

इस प्रकार अनादर का भाव हमारे सम्बन्ध को कमजोर और कड़वा बना देता है। आदर का प्रदर्शन हमारे सम्बन्ध को अधिक मजबूत और मधुर बना देता है। आदर के भाव से दो व्यक्तियों के बीच घनिष्ठता और सौहार्द स्थापित हो जाता है।

एक वृद्ध सफेद बालों वाला व्यक्ति प्रधानाचार्य के कमरे में प्रविष्ट हुआ। नवयुवक प्रधानाचार्य के अनुभव किया कि उसे बैठाने के लिए उसके कमरे में कोई कुर्सी खाली नहीं थी, उसने उनकी बुजुर्गी का ख्याल करके आदर की भावना के साथ अपनी कुर्सी उनको बैठने के लिए दी और चपरासी को घन्टी बजाकर बुलाकर कहा कि एक और कुर्सी लेकर आये। उस वृद्ध आदमी की आँखों में इस आदर के भाव को देखकर आँसू आ गये। वह इस आदर के भाव को जो उसे प्रधानाचार्य के द्वारा मिला था, बताते हुए कभी थकता नहीं था।

देव समाज के एक आदरणिय मिशनरी थे। एक बार उनके पास एक नवयुवक तपती हुई गर्मी में दोपहर के समय आया। वह खड़े हो गये, स्वयं पानी की बाल्टी रखकर उस नवयुवक से प्रार्थना की कि वह स्नान कर लें। नव युवक को ऐसा लगा मानो उसे राजाओं का सा स्वमागत मिला है। उसने यह घटना अनेकों को सुनाई। मिशनरी की इस आदर और सेवा भावना ने उसे हमेशा के लिए जीत लिया।

विशेष सत्संग वा सत्य धर्म बोध उत्सव

जैसा कि पत्रिकाओं वा निमन्त्रण पत्रों द्वारा धर्म सम्बन्धियों को सूचित किया गया था कि डेराबस्सी स्थित देव आश्रम में 19 सितम्बर से सत्संग का आयोजन किया गया। इसके लिए विशेष रूप से साफ सफाई वा बिछाई की गई । 19 सितम्बर की शाम 5 बजे प्रवेश सभा हुई, इसमें लखनऊ, पदमपुर, गंगानगर, मेरठ, यमुना नगर, अम्बाला से यात्री पधार गए थे। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी जल्दी पहुंच गए थे। बाकि चण्डीगढ़ वा दड़वा से कुछ जन सभा में शामिल होने के लिए आए।

5.00 बजे प्रवेश सभा :- इस सभा के सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे, जिन्होने भजन वा देव स्तोत्र के गान के बाद पहले दिली भावों से सहाय प्रार्थना की।

उन्होंने मन्दिरों, गुरूद्वारों वा मक्का आदि में जो दुर्घटनाएं हुई उनका ज़िकर किया और बताया कि किस प्रकार संसार मिथ्या में भटक रहा हैं। परन्तु धर्म स्थानों से उसे कुछ नहीं मिलता। पूजनीय भगवान ने फरमाया है कि मनुष्य को उसकी भाव – शक्तियां चलाती हैं। नीच भाव शक्तियों को जाने बिना मनुष्य बहुत हानि और महा दुख उठाता है, उसकी घटनाएं बताई। फिर बताया कि अपनी भाव शक्तियों को जानने के लिए सत्गुरू की देव ज्योति वा देव तेज की आवश्यकता है। उसे पाने के लिए दिल की गहराई से प्रार्थना, उच्च संगत, उच्च पुस्तकों का पाठ करके ही हम अपनी भाव शक्तियों को जान सकते हैं। उनकी ज्योति में ही सतगुरू के अद्वितीय रूप को देखा जा सकता हैं। भगवान की जय जय करने से कुछ नहीं होगा। प्रवेश सभा के तौर पर यह दिलों को आने वाले प्रोग्राम से लाभ उठाने के लिए तैयार करने में सहायक हुई।

20.09.2015 सुबह 9.30 बजे – इसके सभा प्रचालक श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। देव स्तोत्र के गान वा भजन के बाद श्रीमान जी ने फरमाया कि नेचर का विकास का क्रम चारों जगतों में जारी है। साधारण पत्थर का विकास होते – 2 कोहीनूर हीरा बन गया, इसी प्रकार पौधों वा पशुओं का विकास हुआ। मनुष्य ने पशुओं से विकास पाते – 2 फादर डैमीयन, मदर टैरेसा, बुद्ध जैसे परोपकारियों का रूप धारण किया। उसी विकास क्रम ने मनुष्यों में से अद्भुत शक्तियों से सम्पन्न देवात्मा को जन्म दिया, जिन्होंने सब धर्मों में जो जप, तप, अराधना के साधन थे उनको मिथ्या सिद्ध किया कि मनुष्य का उससे कुछ भला नहीं होता। आवश्यकता है अपनी कमियों को देखकर उच्च जीवन को विकसित किया जाए। उनकी शरण प्राप्त करके किस – 2 प्रकार एक – 2 जन में अपनी नीचता देखी और उससे उद्धार पाया है, उसकी कई उदाहरणें पेश की

20.09.2015 :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी – उन्होंने बताया कि अनुराग क्या होता है, किसी भी सुख के लिए गहरा प्रेम। सुख अनुराग मनुष्य को अन्धा कर देते हैं, चाहे वह सुख अनुराग धन का हो, मोह का हो, आलस्य हो, स्वाद हो, नशे हो, मान बड़ाई प्रशंसा का हो, सबके सब मनुष्य को अपने लिए और दूसरों के लिए हानिकारक बनाते हैं, इसीलिए इन्हें पूजनीय भगवान की शिक्षा के अनुसार नीच अनुराग कहते हैं। नीच घृणाओं की परिभाषा बताई कि जब किसी नीच सुख अनुराग, नीच इच्छा पर चोट लगती है, तो उसके पूरा न करने पर नीच घृणा की उत्पति होती है, मनुष्य को अपने उपकारी, हितकारी भी शत्रु नज़र आने लगते है। यह नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं सम्बन्धों में नर्क पैदा करते हैं और आत्मा का नाश करते हैं, इनको बहुत ही सुन्दरता से उदाहरणों के द्वारा प्रस्तुत किया।

21.09.2015 सुबह 9.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि जैसे कहा जाता है कि विद्या वहीन, नर पशु समाना, उसी प्रकार कह सकते है कि धर्म वहीना जन पशु निर्कष्टा धर्म ईमानदारी, पवित्रता, कृतज्ञता, श्रद्धा, अभाव निवारण आदि उच्च भावों की गतियों के द्वारा आता है। सर्वप्रथम श्रद्धा के भाव के द्वारा हम धर्म की दहलीज पर पांव रखते हैं। हमें जब तक दूसरों के गुण और अपनी हीनता नजर नहीं आती धर्म की पहली सीढ़ी भी नहीं चढ़ सकते। उन्होंने महान पुरुषों परोपकारियों की उदाहरणें दी, कि ऐसे जनों के आगे सजदा करके हम कुछ न कुछ उनके गुण ग्रहण करने की प्रेरणाएं लेते हैं। श्रद्धा के बिना, जीवन नही मिलता जैसे कहा गया है कि "सकल पदार्थ है जग मांहि, श्रद्धा वहीन जन पावत नाहीं। उन्होंने श्रद्धा भाव के महत्व को बहुत सुन्दर शब्दों में ब्यान किया।

21.9.2015 शाम 5.00 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि हमने भजन गाया है कि "जीवन दाता दो मोहे जीवन" जीवन सम्बन्धों में है, सम्बन्धों में हमारे व्यवहारों में है। परन्तु हमारे धर्म मतों ने सम्बन्धों को माया बताया है। गुरू महाराज की शिक्षा नेचर के नियमों पर आधारित विज्ञान मूलक शिक्षा है और जैसे विज्ञान में नई खोज़ें होती हैं, तो पूजनीय भगवान ने फरमाया है कि मेरी कोई शिक्षा यदि उस कसौटी पर ख़री नहीं उतरती तो वह भी छोड़े जाने के योग्य है। अपना भला और दूसरों का भला करना ही धर्म है। "परहित भाव हृदय उपजाओ, धर्म मार्ग की दिग तव जाओ।" हम स्वार्थ से भरे हुए हैं, अपने सुखों की दुनियों से निकलकर दूसरों की दुनियां में प्रवेश करके, उनका हित करके ही हम धर्मवान बनने के मार्ग पर पड़ते हैं।

22 – 9 – 2015 सुबह 9.30 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि नशेबाज कई बार सड़कों पर गिरे पड़े होते हैं। धन, दुनियांदारी का भी नशा है, हमें यह पता होकर भी कि अच्छी संगत में बैठकर हमें लाभ हुआ था, दुनियांदारी के चक्कर में हम उसे महत्व नहीं देते। कारण है कि हमारे भीतर श्रद्धा भाव नहीं है। श्रीमान नौध सिंह जी की श्रद्धा भाव के शानदार उदाहरण दिए। बहुत से गुणधारियों का जिकर किया कि हमें उनके आगे झुकना चाहिए। हमारे चारों ओर गुणधारी हैं। Emerson ने कहा था कि मुझे जो भी इन्सान मिला, मुझे कुछ सिखाकर गया, क्योंकि उनके भीतर श्रद्धा की आंख थी। सभापति जी ने गुणधारियों के गुणों को देखने, उनके दिल के गहरे भावों से झुकने की ओर प्रेरित किया।

शाम 5 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभा में श्रीमान जी ने बताया कि जैसे पैबन्द लगाकर पेड़ों से बढ़िया नसल के फल पैदा होते हैं, उसी प्रकार उच्च संगत का पैबन्द हमें बढ़िया किसम के इन्सान बना देते हैं, परन्तु पैबन्द के साथ जो शाखाएं पहले पौधे की होती हैं, उन्हें न काटा जाए तो पैबन्द लगी शाखाएं फलफूल नहीं सकती। उन्हे काटना पड़ता है, उसी प्रकार नीच संगत से बचकर ही मनुष्य का जो भला हुआ था, वह कायम रह सकता है। अनुकूल हालात संगत में मिलते हैं, देव गुरू के देव प्रभावों में मिलते हैं, दुनियां के प्रतिकूल हालात संगत के अच्छे असरों को खत्म कर देते हैं। फिर उन्होंने बहुत सी उदाहरणें दी कि धर्म संगत से जुड़कर एक एक इन्सान कितना परिवर्तित हुआ, बेईमान ईमानदार बन गए, परन्तु संगत से कटकर किस प्रकार उनके जीवन का अन्त हुआ। उनका सारा ही ब्यान बहुत प्रभावित करने वाला था। 21 तारीख को और 22 तारीख को गोनियाना से कई जन पहुंच गए।

सुबह 9.30 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी, उन्होंने बताया कि धर्म पूजा पाठ वा जप से नहीं आता, श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव हमारे सम्बन्धों को

ठीक रखने के लिए आवश्यक है। फिर बताया कि हम पर मेहरबानियों की बारिश हुई है, परन्तु 98% लोग कृतज्ञता वहीन हैं। उपकार पाकर भूल जाना इन्सानी फितरत है। समाज में आने से पहले हमने कृतज्ञता का नाम भी नहीं सुना था। यहां आकर अपने उपकारियों का रूप नजर आने लगा। उन्होंने अपनी, माता, पिता वा अध्यापिकों के उपकारों का भरे दिल से ब्यान किया। फिर 2 और धर्म सम्बन्धियों ने अपने उपकारियों के उपकारों का वर्णन किया, जो वह दिल की गहराई से अनुभव कर रहे थे ओर उनके आसू बह रहे थे। यह सभा भी बहुत प्रभावशाली थी।

23 – 9 – 2015, शाम 5 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी श्रीमान जी ने बताया कि हम में से कोई भी दुख, बिमारी, असफलता नहीं चाहता, परन्तु दुख घर घर में हैं। प्राकृतिक आप दाएं हैं और धर्मों वाले कहते हैं कि परमात्मा महा दयालु है, सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है। तब सोचो कि जब यू.पी. में दंगे हुए, बलात्कार होते हैं, कत्ल होते हैं, तो परमात्मा क्यों नहीं उन्हें रोकता। कुछ लोग कहते हैं कि देव समाज में नेचर कहते है, हम परमात्मा कहते हैं, बिल्कुल ग़ल्त है। उन्होंने नेचर की व्याख्या की और उसमें जो नियम काम करते हैं, वह अटल हैं उन्हें समझाया। नेचर में हर घटना नियमों के अनुसार होती है। जब हमारे घरों में कलह कलेश होता है, तो सदभावना का नियम भंग होता है। श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी भरे व्यवहारों का नियम पूरा होगा, तो मेल आएगा, यही धर्म के नियम है। यह सभा बहुत ही ज्ञान वा भाव वर्द्धक थी।

24 – 9 – 2015, सुबह 9.30 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। "हो भाग्य सत्गुरू तुम्हें मैंने पाया, तेरे फैज़ों का गीत जाए न गाया।" श्रीमान जगदीष जी ने बहुत ही सुन्दर भावों से इस भजन का गान किया। सभापति जी ने आज भी कृतज्ञता के सुन्दर भाव के विषय में बताया।

सुन्दर दृष्य पेश किए। सरदार जमीयत सिंह जी की कुछ दिन ही श्रीमान सावन सिंह जी ने जब वह 16 – 17 वष्र के सेवा की थी, उसके लिए उन्होंने उन्हें किस प्रकार उन्हें बड़ी उमर में पढ़ाया, पटवारी, कानूनगो और तहसीलदार तक बनाया और सरदार सावन सिंह जी की कृतज्ञता ने अपने उपकारी पोते की मां गुज़रने पर अपनी कुछ दिनों की बच्ची को उसकी मासी के पास भेजकर अपनी पत्नी से अपने उपकारी के बच्चे को दूध पिलाकर बड़ा किया, इस प्रकार के कृतज्ञता के बहुत सुन्दर दृष्य पेश किए जो दिलों को पिघलाने वाले थे।

24 – 9 – 2015, शाम 5 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, उन्होंने बताया कि अन्धेरा कितना ख़ौफनाक है और रोशनी किस कदर बरकत ही चीज़ है। उन्होंने भौतिक सूर्य, चांद, बिज़ली की बरकतें बताई, फिर मान्सिक रोशनी किस प्रकार दिमागों को रोशन करती है, बड़े बड़े वैज्ञानिकों की मान्सिक रोशनी ने ही इतनी बड़ी बड़ी खोजें की हैं, उसके बाद सात्विक भावों अर्थात श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी आदि उच्च भावों की भी रोशनी है, जिनमें दूसरों के गुण, उपकार वा दुख दिखाई देते हैं। इससे भी ऊपर देव शक्तियों से देव रोशनी अर्थात देव ज्योति का प्रकाश हुआ है, जो मनुष्य के स्वभाव को अर्थात उसके आत्मा की गठन, उसके रोगों, उसके पवन वा उससे मोक्ष को दिखाती है। मनुष्य के व्यवहारों में उच्च परिवर्तन पैदा करती है। यह सभा भी ज्ञान वा भावों का मिश्रण थी, जिसकी समझ साधारण जन भी समझ सकते थे।

25 – 9 – 2015 सुबह 9.30 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी, उनहोनें बताया कि पुराने समय से लेकर अब तक धर्मों कि गिणती का शुमार नहीं, सब डंका बज रहे हैं, कि हमारा धर्म सबसे बढ़कर है, परन्तु इसके साथ पापाचार, बलात्कार, बेईमानी आसमान को

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

छू रहीं है। जहां सच्चा धर्म होगा वहां यह नीचता काफूर हो जाएगी। हमारे शक्ल देखने के लिए शीशे का अविष्कार हो गया, हमारे शारीरिक अंगों को देखने के लिए X-Ray एंजोग्राफी, इससे भी बढ़कर शारीरिक इन चीजों में विकास हो रहा है, परन्तु हमारे स्वभाव को कोई धर्म नहीं दिखावा, यह काम देव धर्म ही करता है, जो हमारे नाशुकरपन, बेईमानी, हमारे अंह और अन्मेल पैदा करने वाले भावों को दिखाकर शुक्रगुज़ारी, ईमानदारी, दया, पवित्रता पैदा करके हमारे सम्बन्धों को स्वर्गिय बनाता है। उन्होंने बहुत दिल छूने वाली उदाहरणें दी। इस बहुत ही प्रभावशाली सभा के साथ सत्संगद की सभाओं की सभाप्ति हुई। और शाम को उत्सव की प्रवेश सभा आस्म्भ हो गई। जो अगले अंक में वृतान्त दिया जाएगा।

शोक समाचार

बहुत शोक की बात है कि हमारे बहुत प्यारे और पुराने विशेष धर्म सम्बन्धी श्रीमान बलवन्त राए जी धवन का 7 सितम्बर 2015 की सुबह अचानक देहान्त हो गया है। वह सुबह सैर करने के लिए घर से निकले थे, परन्तु थोड़ी देर बाद ही दिल का दौरा पड़ने से Collapse हो गए। वह 88 वर्ष के थे। वह अपने पीछे एक बेटा, प्रदीप, बेटिया बीबी सुमन, रोजी और बीबी सुमति जी और उनके बच्चों को छोड़ गए हैं। वह एक विशेष आत्मा थे। भगवान के प्रति गहरी श्रद्ध रखते थे। भगवान की शरण में आकर उनकी ईमानदारी की विशेष धाक थी। वह रिश्वत से बहुत घृणा करते थे। अपने पिता की जायदाद से कुछ नहीं लिया। वह दरवेश आत्मा श्रीमान राम सिंह जी से प्रभावित होकर देव समाज से जुड़े थे। उनके उच्च जीवन से प्रभावित होकर कई और जन समाज से जुड़े। वह श्रद्धा भाव से भरकर जब भजन गाते थे तो दिलों को प्रभावित कर देते थे, विशेष वातावरण बन जाता था। वह अपनी कमियां देखकर बहुत दुख से ब्यान करते थे और अपने हृदय को शुद्ध करते थे। उन्होंने देव समाज हैड आफिस में कई वर्ष बड़े त्याग से सेवा की। ऐसी सुन्दर आत्मा का चले जाना परिवार और समाज के लिए बहुत बड़ा घाटा है। हमारी ऐसी कामना है कि उनकी हर प्रकार से परलोक में सहायता हो और उन्हें और उनके परिवार को शान्ति प्राप्त हो।

उनका एक साथी – बलदेव सिंह

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts